शिक्षा का उत्थान

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

अंक-४१ वर्ष-२०२४

माह फरवरी

शिक्षक का सम्मान

शिक्षण संवाद

मिशन
शिक्षण
संवाद

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-२०२४
अंक-४१

माह- फरवरी २०२४

प्रधान सम्पादक

श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक

अवनीन्द्र जादौन, प्रांजल सक्सेना

सम्पादक

ज्योति कुमारी, बबलू सोनी

सह सम्पादक

सुशांत सक्सेना, शंखधर द्विवेदी, आनन्द मिश्रा

छायांकन

वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन

मुनीश कुमार, प्रतिभा यादव

विशेष सहयोगी

विकास मिश्रा, अफ़ज़ाल अहमद, साकेत बिहारी शुक्ला

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन शिक्षण संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

मिशन शिक्षण संवाद स्वप्रेरित शिक्षकों का एक ऐसा समूह है जो लगातार कई वर्षों से अपने नवाचारों के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता में वृद्धि के लिए कार्य कर रहा है। इस समूह से जुड़े हुए शिक्षक न केवल अपने विद्यालयों में अच्छा कार्य कर रहे हैं बल्कि अपने उत्कृष्ट कार्यो को विभिन्न समूहों के माध्यम से प्रदेश के अन्य शिक्षकों को भी भेजते हैं ताकि अन्य विद्यालयों के बच्चे भी उक्त नवाचारों के माध्यम से सुगमतापूर्वक एवं रोचक तरीके से विषयवस्तु को सीख सकें। इस समूह के माध्यम से शिक्षकों को अपने नवाचारों को प्रदर्शित करने का एक उचित मंच भी मिलता है। इस समूह में जुड़े शिक्षक आपस में सीखते एवं सिखाते हुए शैक्षिक गुणवत्ता में वृद्धि के लिए अच्छा कार्य कर रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका जो कि शिक्षकों एवं छात्रों के लिए अत्यंत उपयोगी है, के लिए मैं मिशन शिक्षण संवाद की पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता हूं।

एन.पी.सिंह

खण्ड शिक्षा अधिकारी

विकास खण्ड रामनगर

जनपद चित्रकूट

मिशन शिक्षण संवाद

आओ हाथ से हाथ मिलायें, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ायें।

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

सम्पादकीय

''प्रकृति का एक सिद्धांत है कि वह सक्रिय को सुन्दर, उपयोगी और मूल्यवान बना देती है तथा निष्क्रिय को नष्ट कर देती है।''

यही कारण है कि प्रकृति में एक ओर सुन्दर, मनमोहक मूल्यवान बसन्त का भी आगमन होता है वहीं दूसरी ओर निष्क्रिय को नष्ट करने के लिए भीषण ग्रीष्म का प्रदर्शन भी देखने को मिलता है। मिशन शिक्षण संवाद ने भी प्रकृति के प्रेरक सिद्धांत के अनुपालन में सदैव सक्रिय शिक्षक, विद्यार्थी और व्यक्तियों को निष्क्रियता से बचाने के लिए विविध सक्रियता के शुभ अवसर के माध्यम से सुन्दर, सकारात्मक, उपयोगी और मूल्यवान बनने और बनाने में सहयोगात्मक प्रयास किया है, क्योंकि मिशन शिक्षण संवाद का मानना है कि यदि अवसर को भी अवसर न मिले तो वह भी निष्क्रिय होकर नष्ट हो सकता है। इसीलिए मिशन शिक्षण संवाद ने शिक्षक, विद्यार्थी और व्यक्तियों के अन्दर छिपी विविध प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने का शुभ अवसर देकर बेहद सुखद परिवर्तन का अहसास किया है। यही कारण है कि लेखन के रूप में आज हजारों शिक्षक और विद्यार्थी अपनी प्रतिभा में चार चाँद लगा रहे हैं। मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका ''शिक्षण संवाद'' भी इन्हीं प्रतिभाशाली प्रतिभाओं का सामूहिक प्रयास है। जिन्होंने अपने कुशल लेखन एवं तकनीकी से ''शिक्षण संवाद'' नाम का एक ज्ञान का गुलदस्ता तैयार किया है। आइये हम सब भी ''शिक्षण संवाद'' के विविध लेखों अथवा पटलों को पढ़कर इन सभी प्रतिभाओं को प्रेरित कर सक्रिय बनाये रखने में सहयोगी बनें तथा उपयोगी ज्ञानवर्धक स्तम्भों से ज्ञान का लाभ उठायें।

धन्यवाद!

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
विचारशक्ति–हम बच्चे हैं भारत के	7
बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न	8-9
बेसिक शिक्षा के अनमोल बाल रत्न	10-11
बेसिक शिक्षा के बाल कलाकार	12
Inclusive education and our responsibilities	13
मिशन गीत	14
टी.एल.एम.संसार–गौरैया संरक्षण	15
बात महिला शिक्षकों की–पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव	16
बच्चों का कोना–बच्चों को संदेश	17
प्रेरक–प्रसंग–राम कृष्ण परमहंस	18
प्रेरक–प्रसंग–सन्त रविदास जी का जीवन–चरित्र	19-20
प्रेरक–प्रसंग–मोरारजी देसाई	21
शिक्षण तकनीक–Teaching Technology	22-25
योग विशेष–योग का परिचय	26
बाल कविता–बुनियादी शिक्षा	27
कविता–बेसिक के बच्चे	28
नवाचार–मेमोरी गेम्स	29
दिवस विशेष–राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	30
बाल साहित्य–यातायात के नियम	31
बाल साहित्य–रानू मैं क्या जानू	32

हम बच्चे हैं भारत के

शिक्षण संवाद

सीधे– सच्चे भोले –भाले
भारत की मिट्टी ने पाले
खेत खलिहान है संगी साथी
हरियाली है हमको भाती
कारण बने देश के गौरव गान के
क्योंकि हम बच्चे हैं किसान के!!

पूजा इबादत में फर्क न जाने
रीति रिवाजों का महत्व माने
सर्वशक्तिमान को पहचान कर
आस्था का पवित्र अलख जलाकर
बन जायेंगे दीपक सम्मान के
क्योंकि हम बच्चे हैं भगवान के!!

तिरंगे का मान बढ़ाते हैं
दुश्मन को धूल चटाते हैं
समर्पण बलिदान का भाव रखें
वीरता से भरा स्वाभिमान चखें
हम प्रहरी है भारत के शान के
क्योंकि हम बच्चे हैं जवान के!!

हर धर्म की सोच पवित्र
हर मज़हब की पाक नीयत
इंसानियत के हकदार हम
खुली सोच से सबको अपनायें हम
सब अनुयायी हैं संविधान के
क्योंकि हम बच्चे हैं इंसान के!!

रोज़ सवेरे विद्यालय जाते
नये नये तरीकों से पाठ सीखते
स्वयं प्रयोग करके भी समझते
अधिगम लक्ष्यों को पूरा करते
निपुण छात्र कहलायेंगे भारत देश के
क्योंकि हम बच्चे हैं उत्तर प्रदेश के!!

पूजा चतुर्वेदी
शिक्षिका
उच्च प्रा वि घुघंराला
हापुड़

बेसिक शिक्षा के अनमोल रत्न

रेशमा

सहायक अध्यापक
कंपोजिट विद्यालय सिम्भालका
विकास क्षेत्र– शामली, जनपद–शामली

माह फरवरी 2024 की उपलब्धियाँ

1. वी0वी0 इंटर कॉलेज, शामली के एन.एस.एस. कैंप को कंपोजिट विद्यालय सिम्भालका, शामली में सफल आयोजन कराने में रेशमा जी ने मुख्य भूमिका निभाई एवं उनके छात्र–छात्राओं को मोटिवेशनल स्पीच के लिए आदरणीय जिलाधिकारी, शामली द्वारा सम्मान प्राप्त हुआ।

2. उत्तर प्रदेश मिलेट्स पुनरुद्धार कार्यक्रम के अंतर्गत प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत आयोजित मिलेट्स क्विज प्रतियोगिता में रेशमा जी को प्रथम स्थान प्राप्त करने पर बेसिक शिक्षा अधिकारी शामली एवं मुख्य विकास अधिकारी शामली द्वारा प्रशस्ति पत्र एवं सम्मान प्रतीक चिन्ह प्रदान किया गया।

नन्दिनी – कक्षा–08

नाम– नन्दिनी – कक्षा–08
विद्यालय– पूर्व माध्यमिक विद्यालय रमईपुर
विकासखण्ड– बाबागंज
जनपद– प्रतापगढ़
उत्तर प्रदेश

खेल का नाम– लम्बी कूद
स्थान– प्रथम स्थान
स्तर– राज्य स्तरीय

आयोजन स्थल–
स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इण्डिया स्टेडियम, लखनऊ

मार्गदर्शक शिक्षक
रामानन्द यादव
सहायक अध्यापक
पूर्व माध्यमिक विद्यालय रमईपुर
बाबागंज–प्रतापगढ़।

कंपोजिट विद्यालय इग्राह की योग टीम ने मंडल स्तर पर प्राप्त किया प्रथम स्थान

डिलारी क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालय इग्राह कंपोजिट की योग टीम ने बेसिक शिक्षा विभाग की मंडल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता (बालक वर्ग) में प्रथम स्थान प्राप्त कर जनपद मुरादाबाद का नाम रोशन किया। बेसिक शिक्षा विभाग की मंडल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन इस बार मंडल के जनपद अमरोहा में ऑक्सफोर्ड इंटरनेशनल स्कूल गजरौला में किया गया। जिसमें मुरादाबाद मंडल के सभी जनपदों ने प्रतिभाग किया। इस प्रतियोगिता में उच्च प्राथमिक विद्यालय इग्राह कंपोजिट की योग टीम (बालक वर्ग) ने प्रथम स्थान प्राप्त कर राज्य स्तर पर होने वाली योग प्रतियोगिता हेतु अपना स्थान पक्का किया।

नेशनल लेवल पर प्रथम स्थान

मेरे विद्यालय उच्च प्राथमिक विद्यालय मुर्धवा(1–8), म्योरपुर सोनभद्र की कक्षा 7 की आरती एवम कक्षा 8 की मन्तशा ने क्रमशः हैंडबॉल एवं साइकिल पोलो में नेशनल लेवल पर प्रथम स्थान प्राप्त कर अपने जनपद एवं विद्यालय का नाम रोशन किया है, विद्यालय परिवार इन बच्चियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

डॉ0 शालिनी गुप्ता,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय मुर्धवा (1–8),
विकास खण्ड– म्योरपुर,
जनपद–सोनभद्र।

वर्तमान समय में बेसिक स्कूल भी कॉन्वेंट स्कूलों से कम नहीं हैं। बच्चे लगभग सभी स्कूलों में एक जैसे ही होते हैं परिस्थितियाँ भले ही अलग हों। अब बात आती है कि एक शिक्षक अपने छात्रों को क्या संसाधन मुहैया कराते हैं, और कैसे योग्य बनाते हैं? तो ऐसा ही प्राथमिक विद्यालय सूरतगढ़, विकास खंड–अतरौली, जनपद–अलीगढ़ है जिसके 25 छात्र/छात्राएं एक साथ ताल व लय के साथ बैंड बजाते हैं। ये छात्र जनपद स्तरीय विभिन्न आयोजनों में बुलाए जाते हैं। इनकी ताल व आयु को देख कर इन्हें बहुत प्रशंसा मिलती है। इनके अध्यापक इनको राष्ट्रीय पर्वों/रैलियों के लिए तैयार करते हैं। छात्र अपनी प्रतिभा से गाँव के नागरिकों का मन मोह लेते हैं। इससे हमारे बेसिक स्कूलों की छवि को चार चाँद लग जाते हैं। साथ ही बड़े–बड़े कार्यक्रमों में हमारे जन–प्रतिनिधि छात्रों की प्रतिभा देख कर वाह–वाह करते हैं। जिससे यह संदेश प्रदेश के अन्य जनपदों तक जाता है कि बेसिक में भी प्रतिभाओं को निखारा जा रहा है। जिससे बेसिक शिक्षकों की छवि में चार– चाँद लग जाते हैं। अब बेसिक स्कूलों में छात्र संख्या भी बढ़ रही है, छात्र भी पढ़ाई में रुचि ले रहे हैं। जिससे पढ़ाई का स्तर भी उच्च गुणवत्ता का हो रहा है। छात्रों को पाठ्य सहगामी क्रियाओं में प्रतिभाग करने का भरपूर अवसर मिल रहा है। अब आम नागरिक भी बेसिक स्कूलों में अपने पाल्यों का भविष्य सुरक्षित समझ रहे हैं।

मूलचन्द्र (प्र0अ0)
प्रा0वि0 सूरतगढ़ अतरौली
जनपद–अलीगढ़ (उ0प्र0)

Inclusive education and our responsibilities

शिक्षण संवाद

Every child has a birth right to get to be believed and beloved by his/her parents and society too . The teachers are required and requested to help all children to get the position in positive aspects . Let's see that not even a single single child miss his/her fortune . Let's ensure that we are saving all the precious childhoods . Let's be courageous enough to make things better as much as possible . Every individual among us is equally responsible for the betterment of the social and academic life of our children . When we joined this pious job of being a teacher , we definitely took an oath that we will do our best as a teacher in the service of our mother India . Hence none of us may be free from our responsibilities. Besides , it's our moral obligation to serve our motherland this way .

No one is perfect in this world , but one is always provided chances through his deeds to prove himself before the Almighty . We are no sinners at all ! We are teachers and on account of becoming a government teacher , we owe to maintain the dignity of our existence as a teacher .

So friends ! let's be what we ought to be ! The teachers.....

Glorified teachers ! ....patriot teachers ! ....true teachers !

One more thing I would like to mention here is that we should not take the term "Disable " in it's virtual sense in the prospect of our children ; instead we should take it as....."They are differently able . " They can also conquer the world if their teachers would make them believe in their ability. Yes , it's our (teacher's) moral duty to support and build up their confidence and get them to the heights where they can also reach !

Jai Hind , jay Bharat !!

Asha Sharma
P. S. Sonbarsa, khadda,
kushinagar, U.P.

मिशन गीत

प्यारा हम सबको हमारा मिशन,
देता सरंक्षण और सम्मान मिशन।
शिक्षक की प्रतिष्ठा कर पुनर्स्थापित,
दिलाया समाज में सम्मान सतत ।।

स्वैच्छिक, स्वयंसेवी, निस्वार्थ पहल,
सार्थक, सकारात्मक, प्रेरक पहल।
विश्वास, प्रेम, सहयोग, प्रोत्साहन,
सकारात्मक ऊर्जा का भण्डार मिशन

शिक्षा का उत्थान, मानवता कल्याण,
जागृत किए बेसिक शिक्षा के प्राण।
मानवता जब हो सुखी, समृद्ध,
बनता है पूरा राष्ट्र तब समृद्ध।।

हैं मिशन के स्तम्भ चार,
परिवेश, पढ़ाई, प्रसार, परिवार।
ज्ञान गंगा जब बहती निरन्तर,
सबको मिलती शिक्षा और संस्कार।।

रचनाकार–
डॉ०नीतू शुक्ला
पदनाम– प्रधान शिक्षक
विद्यालय– मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1
ब्लॉक– सिकंदरपुर कर्ण
जनपद–उन्नाव

TLM गौरैया संरक्षण

शिक्षण संवाद

विषय –पर्यावरण

कक्षा– प्राथमिक स्तर और जूनियर स्तर

प्रयुक्त सामग्री –
दफ्ती की लुग्दी, गुब्बारा, चिड़िया, फूल पत्ती, रूई, फैविकोल।

उपयोगिता–
बच्चे गौरैया संरक्षण के लिये घोंसले का निर्माण कर सकेंगे एवं गौरैया सरंक्षण के महत्त्व को समझ सकेंगे।

Tlm निर्माणकर्ता– रामकुमारी (स.अ.)
स्कूल का नाम –कंपोजिट विद्यालय बरहट
वि.ख.–मानिकपुर, जनपद– चित्रकूट
राज्य –उत्तर प्रदेश

पहले की अपेक्षा बहुत बदलाव

शिक्षण संवाद

चमोली जनपद के सुदूर वर्ती ग्राम कोठा में जन्मी श्रीमती रीता सेमवाल ने गढ़वाल विश्वविद्यालय श्रीनगर से संस्कृत विषय में मास्टर की डिग्री लेने के उपरांत 1986 में B-Ed का प्रशिक्षण लिया। 28 मार्च 1995 में प्राथमिक शिक्षा विभाग में सहायक अध्यापिका के पद पर जनपद चमोली के राजकीय प्राथमिक विद्यालय सोनला बछेर में सहायक अध्यापिका के पद पर प्रथम नियुक्ति ग्रहण की। बचपन से ही एक होनहार छात्रा के रूप में श्रीमती सेमवाल की पहचान रही। नियुक्ति होते ही श्रीमती सेमवाल ने कर्मठता, ईमानदारी, उत्साह और ऊर्जा के साथ अपना शैक्षणिक कार्य आरंभ किया। प्रारंभ से ही बच्चों को पठन पाठन से लेकर संज्ञानेतर गतिविधियों में राज्य स्तर तक प्रतिभाग करवाया। 3 साल चमोली जनपद में कार्य करने के पश्चात 1997 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय फरासू जनपद पौड़ी में स्थानांतरित हुई। वर्ष 2005 में संकुल केंद्र खिर्सू में पदासीन होकर संकुल प्रभारी का पद ग्रहण किया। 3 वर्षों तक संकुल समन्वयक के रूप में कार्य करने के पश्चात वर्ष 2007 में राजकीय प्राथमिक विद्यालय चौंरखाल में प्रधानाध्यापिका का पद सुशोभित किया। 5 वर्षों तक विद्यालय में कार्य करने के पश्चात विकास खण्ड यमकेश्वर में बी आर सी सह समन्वयक के रूप में पदासीन हुई। 2014 में पुनः राजकीय प्राथमिक विद्यालय नीलकण्ठ में प्रधानाध्यापिका के पद पर आसीन हुई। अपनी शैक्षिक यात्रा के दौरान अध्यापिका ने सभी विद्यालयों और सभी पदों पर अभूतपूर्व कार्य किये। जिसमें बच्चों के संज्ञानात्मक एवं संज्ञानेतर स्तर में विकास, विद्यालय के वातावरण को समृद्ध, संसाधन युक्त एवं सौंदर्य युक्त करना, नवाचारी गतिविधियां संपन्न करना शामिल है। अपनी नवाचारी प्रवृत्ति के चलते अध्यापिका को कई मंचों पर सम्मानित किया गया। प्रमुख रूप से आई आई एम अहमदाबाद, मानव संसाधन मंत्रालय, अमर उजाला देहरादून, पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत जी, जनपद पौड़ी के तीन जिला मजिस्ट्रेटों, प्रथम गवर्नर अवार्ड, राज्य पुरस्कार (शैलेश मटियानी) लगभग प्रतिवर्ष जनपद से लेकर राज्य स्तर तक प्रथम टी एल एम पुरस्कार, जनपद स्तर में श्रेष्ठ अध्यापक एवं उत्कृष्ट अध्यापक पुरस्कार, उत्कृष्ट संकुल समन्वयक पुरस्कार, जनपद स्तर पर प्रोजेक्ट निर्माण (प्रथम पुरस्कार) अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। लॉकडाउन के दौरान भी भारत सरकार उत्तराखंड सरकार आईआईटी रुड़की समस्त गढ़वाल मंडल के वाइस चांसलरों द्वारा हमको संयुक्त रूप से ऑनलाइन प्रमाण पत्र प्रदत्त किया गया। वर्तमान में भी अंतरराष्ट्रीय संस्था 60 अंडर 60 संस्था द्वारा 10 फरवरी को दिल्ली में प्रतिभाग हेतु निमंत्रण प्राप्त हुआ है, जिसमें अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका में शैक्षिक यात्रा नवाचारी कार्य और अध्यापिका द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यो का लेख छपने के साथ ही सम्मान प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर 2023 को आपकी सेवानिवृत्ति के पश्चात आपके कार्यों को देखते हुए और शैलेश मटियानी पुरस्कार के एवज में सरकार द्वारा अध्यापिका को 2 साल का अतिरिक्त सेवा विस्तार दिया गया है। वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय नीलकंठ में कार्यरत अध्यापिका ने विद्यालय के लिए बहुत महत्वपूर्ण कार्य किया, जिसके लिए विद्यालय की पहचान जनपद से लेकर राज्य स्तर तक बनी हुई है। मानव संसाधन मंत्रालय में भी विद्यालय की सफलता की कहानी को दर्शाया गया है। अनेक शैक्षिक पत्रिकाओं में विद्यालय के लेख और छायाचित्र देखने को मिलते हैं। अध्यापिका अपने आप में संतुष्ट है कि उन्होंने अपनी सेवा के दौरान एक अच्छे वातावरण का सृजन किया है साथ ही बच्चों को ऊंचे पायदान पर ले जाने का संपूर्ण प्रयास किया और विद्यालय को महत्वपूर्ण पहचान दिलाई। अध्यापिका समस्त अधिकारी वर्ग, अपने ही सहयोगी अध्यापकों, सम्मानित करने वाली संस्थाओं एवं क्षेत्र वासियों का आभार व्यक्त करती हैं कि उनके सहयोग से वह अपने कार्य दायित्वों का भली भांति निर्वहन करने में सफल हो सकी।

बच्चों को संदेश

एक छोटा बच्चा था जो अपने काले रंग को लेकर बहुत उदास रहता था। वह अपने रंग की वजह से बाहर खेलने भी नहीं जाता था और अक्सर दुःखी होकर खिड़की के बाहर देखता रहता था। अचानक एक दिन उसके घर के बाहर एक गुब्बारे बेचने वाला आया। उसके पास बहुत सारे रंग के गुब्बारे थे। अचानक वह बच्चा दौड़कर उस गुब्बारे वाले के पास गया और पीछे से उसका कुरता खींचने लगा। गुब्बारे वाले ने मुड़कर देखा और बच्चे से पूछा, ''तुम्हें क्या चाहिए''? बच्चे ने गुब्बारे वाले से कहा, ''मुझे कुछ नहीं चाहिए मुझे सिर्फ यह बता दीजिए कि क्या आपके पास जो काले रंग का गुब्बारा है वह भी हवा में उतना ही ऊपर जा सकता है जितना यह लाल, पीले, और नीले रंग के गुब्बारे?'' बच्चे के प्रश्न को सुनकर गुब्बारे वाला सारी कहानी समझ गया। उसने काले रंग के गुब्बारे की डोरी खोल दी और वह गुब्बारा हवा में ऊपर उड़ने लगा। बच्चा हवा में ऊपर जाते हुए गुब्बारे को बहुत देर तक देखता रहा। अंत में गुब्बारे वाले ने बड़े प्यार से बच्चे को समझाया कि बेटा कोई भी व्यक्ति अपने रंग की वजह से तरक्की नहीं करता बल्कि उसके अंदर जो अच्छे गुण व काबिलियत है उसकी वजह से ऊपर जाता है और तरक्की करता है। अब बच्चे को शायद अपने सभी सवालों के जवाब मिल गए थे और उसकी सारी परेशानी दूर हो गई थी। बच्चा खुशी से दौड़ता हुआ अपने घर चला गया।

शिक्षा–

इसीलिए हमेशा याद रखिए चाहे बच्चा हो या बड़ा काले या गोरे रंग से कोई फर्क नहीं पड़ता। हमें अपने अंदर के गुणों और अच्छाइयों को तराशना चाहिए।

डॉ हिमांशु अग्रवाल
सहायक अध्यापक
उ0 प्रा0 वि0 गड़ी डहर,
एत्मादपुर, आगरा।

राम कृष्ण परमहंस

शिक्षण संवाद

जब तक जीवन है सीखते रहना चाहिए
कर्म के प्रति समर्पण होना चाहिए

ऐसे सुन्दर विचार महापुरुष रामकृष्ण परमहंस जी के हैं। उन्होंने संपूर्ण विश्व को शान्ति का पाठ पढ़ाया। रामकृष्ण परमहंस जी भारत के महान संत, आध्यात्मिक गुरु और समाज सुधारक थे। रामकृष्ण परमहंस जी का जन्म 18 फरवरी 1836 में बंगाल प्रांत के कामारपुकुर ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम खुदीराम तथा माता का नाम चंद्रमणि देवी था। उनके बचपन का नाम गदाधर था। स्वामी जी ने अपने संपूर्ण जीवन में सभी धर्म की एकता पर बल दिया। वे त्याग, सेवा और साधना सर्वोपरि मानते थे। वे मानव सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानते थे।

रामकृष्ण परमहंस छोटी–छोटी कहानी के माध्यम से शिक्षाएं देते थे। उनकी शिक्षाएँ हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है। उन्होंने कहा कि मानव को अहंकार का त्याग करना चाहिए। सदैव सत्य मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने अनुभव को सर्वश्रेष्ठ शिक्षक बताया। रामकृष्ण परमहंस जी के शिष्य स्वामी विवेकानंद ने उनसे शिक्षा ग्रहण करके भारत को संपूर्ण विश्व में एक नई पहचान दिलायी। स्वामी विवेकानंद जी ने राम कृष्ण परमहंस जी की शिक्षाओं को सारी दुनिया में फैलाया। 18 अगस्त 1886 को महापुरुष रामकृष्ण परम हंस जी ने दुनिया से अन्तिम विदाई ली।

उनकी शिक्षाएँ हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है और हमारा मार्गदर्शन करतीं हैं।

मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा वि अमरौधा प्रथम
ब्लॉक– अमरौधा
जनपद– कानपुर देहात

सन्त रविदास जी का जीवन-चरित्र

शिक्षण संवाद

सन्त रविदास जी का जन्म 1337 ई० में उत्तर प्रदेश के काशी (वाराणसी) जिले में मोची परिवार में (माघ मास की पूर्णिमा) तिथि को हुआ था इसलिए हर साल माघ मास की पूर्णिमा को इनकी जयंती मनाई जाती है। इनके पिता का नाम संतोख दास था तथा इनकी माता का नाम कमसा देवी था। उनके पिता जाति के अनुसार जूते बनाने का पारंपरिक पेशा करते थे, सन्त रविदास भारत में 15वीं शताब्दी के एक महान सन्त, समाज–सुधारक, कवि और ईश्वर के अनुयायी थे। उन्होंने समाज कल्याण के लिए कई आध्यात्मिक और सामाजिक संदेश दिए। इनको सन्त शिरोमणि सतगुरु की उपाधि दी गई है। इन्होंने रविदासीय, पंथ की स्थापना की और इनके रचे गए कुछ भजन सिख लोगों के पवित्र ग्रंथ गुरुग्रंथ साहिब में भी शामिल है। इन्होंने जात–पात का घोर खंडन किया और आत्मज्ञान का मार्ग दिखाया।

एक बार की बात है, कुछ ब्राम्हण स्नान करने के लिये गंगा नदी में जा रहे थे। तभी उन्हें सन्त रविदास जी मिले, उन ब्राम्हणों ने कहा, कि ये लो मेरी जूती ठीक कर दो, तभी उन्होनें कहा क्यों नहीं, यही तो मेरा काम है। उन ब्राह्मणों ने कहा, कि कितने पैसे हुए तो रविदास जी ने कहा, कि जितनी इच्छा हो उतने ही दे दीजिए। रविदास जी ने कहा, कि आपकी इच्छा हो तो एक प्रश्न पूछ सकता हूँ। ब्राम्हण ने कहा, कि हाँ जल्दी पूछो, रविदास ने पूँछा, आप लोग इतनी सुबह कहाँ जा रहे है? ब्राम्हणों ने कहा, कि हम लोग गंगा नदी में स्नान करने जा रहे है, गंगा नदी में स्नान करने से सारे पाप धुल जाते है। रविदास जी ने 1 दमड़ी देते हुए कहा, कि आप मेरी ये छोटी सी भेंट गंगा मैया को दे दीजिएगा और यह मेरी छोटी सी भेंट तभी दीजिएगा जब गंगा मैया स्वयं अपने हाथों से ले लें। ब्राम्हणों ने कहा, कि तुम जैसे अछूतो के लिए क्या गंगा मैया प्रकट होकर आएगीं? सभी ब्राह्मण हँसते हुए वहाँ से गंगा नदी में स्नान करने हेतु चले

गए। वो लोग स्नान करके जब वापस जाने लगे। तभी एक ब्राम्हण बोला स्वामी आप एक बात तो भूल रहे हैं। स्वामी ने पूछा की क्या भूल रहे हैं? वही अछूत की भेंट, तो स्वामी बोले, कि उसे क्या पता कि वो भेंट हमने गंगा मैया को दी है या नहीं। ऐसा मन में विचार करके वो लोग वहाँ से जाने लगे तभी गंगा मैया प्रकट हो कर बोली, कि मेरे भक्त रविदास की भेंट मुझे दे दो। उन्हें अपनी आखों में भरोसा नहीं हो रहा था, कि उस अछूत के लिए गंगा मैया प्रकट होंगी। तभी उन ब्राम्हणों ने वो भेंट गंगा मैया को दे दी और फिर गंगा मैया ने कहा कि ये लो मेरी तरफ से ये कंगन मेरे भक्त रविदास को दे

देना। तभी उन लोगों को लगा कि वो अछूत कोई चमत्कार करता है, वो लोग रविदास के पास न जाकर ईनाम के लालच में राजा के पास उस कंगन को लेकर चले गए। ब्राह्मणों ने राजा से सही बात छिपाते हुए कहा कि इस कंगन को गंगा जी हमारी भक्ति से प्रसन्न होकर हमको प्रदान किया है। राजा ने वह कंगन अपनी महारानी को दिया, महारानी जी को वो कंगन बहुत ही पसंद आया। उन्होनें राजा जी से कहा, कि मुझे इसका दूसरा कंगन भी चाहिए। राजा ने उन ब्राम्हणों से कहा, कि महारानी जी को वो कंगन बहुत ही पसंद आया है,जाओ तुम लोग इसका दूसरा कंगन ले कर आओ। तो ब्राम्हण बोले महाराज हम इसका दूसरा कंगन नहीं ला सकते। राजा ने कहा, कि ये तुम क्या कह रहे हो? ब्राम्हण बोले हाँ, हम सच बोल रहे है, ये हमारी पूजा का फल नहीं है, यह तो रविदास की पूजा का फल है। और सारी बात राजा को सच–सच बताई, राजा ने कहा, कि हम खुद रविदास के पास जाकर उस कंगन का दूसरा कंगन ले कर आएंगे। जब राजा, रविदास के घर पहुँचे तो रविदास अपनी कठौती में पानी भर रहा था। जैसे ही रविदास ने राजा को देखा तो वो आश्चर्य चकित हो गए, उन्होनें राजा से प्रणाम किया और बोले आपने आने का कष्ट क्यों किया? आप हमे बुलवा लेते तो मैं चला आता। राजा ने रविदास से विनम्रतापूर्वक कहा, कि तुमसे कोई भूल नहीं हुई है। मैं अपने लालच की वजह से आया हूँ। तुमने अपनी भक्ति से गंगा मैया को प्रसन्न किया है और उन्होनें तुम्हें ये भेंट स्वरूप कंगन दिया है। रविदास बोले क्या सच में गंगा मैया ने मुझें ये भेंट दी है? ब्राम्हण बोले, कि तुम कोई चमत्कार करते हो। उन्होनें कहा, कि मैं क्या चमत्कार कर सकता हूँ अगर तुम इतने ही अच्छे भक्त गंगा मैया के हो तो अपनी भक्ति से प्रसन्न कर तुम दूसरा कंगन भी मांगलो, रविदास जी फिर कहते है कि अगर बात मेरे जाति के लोगों कि हो तो मैं शांत नहीं रहूँगा, बोलिए मुझें क्या करना होगा? तुम्हें गंगा मैया के पास चलकर अपनी भक्ति से प्रसन्न कर दूसरा कंगन मांगना है। तब रविदास जी ने कहा उसके लिए मुझे गंगा मईया के पास जाने की जरूरत नहीं। रविदास जी ने अपने सच्चे मन से प्रार्थना करके गंगा मैया को प्रसन्न कर लिया, गंगा मैया कठौती में प्रकट हो कर बोली, मेरे प्रिय भक्त आखें खोलो। ये लो मैं तुम्हारी भक्ति से प्रसन्न हो कर मैं तुम्हें एक कंगन देती हूँ। रविदास ने कहा, कि आज आपने मेरी लाज बचा ली, रविदास ने वो कंगन राजा को दे दिया।

इस कहानी के आधार पर एक मुहावरा बन गया।

’मन चंगा तो कठौती में गंगा’

अर्थात–अगर किसी का मन और विचार शुद्ध हों , तो उसे बाहरी जगहों में पवित्रता की तलाश करने की जरूरत नहीं हैं।

रोशनी सिंह
छात्रा–कक्षा–8
विद्यालय का नाम– क0 गाँ0 आ0 विद्यालय कुरारा, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)

मोरारजी देसाई

सिविल सेवा परीक्षा के लिए साक्षात्कार दे रहे व्यक्ति से साक्षात्कार के अंत में पूछा गया ''यदि आप चूने नहीं गए तो क्या आप उदास हो जाएंगे?''

उस व्यक्ति के उत्तर थे –''इसमें उदास होने की कोई बात नहीं अभी संसार के अनेक कार्य मेरे सम्मुख हैं।'' उपरोक्त कथन भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई के थे।

मोरार जी देसाई भारत के स्वाधीनता सेनानी, राजनेता और देश के चौथे प्रधानमंत्री थे। वह प्रथम प्रधानमंत्री थे जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के बजाय अन्य दल से थे। वही एकमात्र व्यक्ति हैं जिन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान ''भारत रत्न'' एवं पाकिस्तान के सर्वोच्च सम्मान ''निशान – ए– पाकिस्तान'' से सम्मानित किया गया था।

मोरारजी देसाई का जन्म 29 फरवरी 1896 को गुजरात प्रांत के भदौली नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता एक शिक्षक थे एवं बेहद अनुशासन प्रिय थे। बचपन से ही मोरारजी देसाई अपने पिता से सभी परिस्थितियों में कड़ी मेहनत करने एवं सच्चाई के मार्ग पर चलने की सीख ली। विद्यार्थी जीवन में मोरारजी देसाई औसत बुद्धि के विवेकशील छात्र थे। तत्कालीन बंबई प्रांत के विल्सन सिविल सेवा से 1918 में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने के बाद उन्होंने 12 वर्षों तक डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया।

श्री देसाई जी को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान तीन बार जेल जाना पड़ा। उन्होंने पहली बार 1937 में राजनीतिक कार्यभार संभाला तथा राजस्व, कृषि, वन एवं सहकारिता के मंत्री बने। 1946 में राज्य विधानसभा के चुनाव के बाद मुंबई में गृह एवं राजस्व मंत्री बने। अपने कार्य के दौरान श्री देसाई ने ''हलवाहा के लिए भूमि'' प्रस्ताव के लिए सुरक्षा काश्तकारी प्रदान कर भू राजस्व में कई दूरगामी में सुधार किए तथा वर्ष 1952 में मुंबई के मुख्यमंत्री बने।

राज्यों को पुनर्गठित करने के बाद श्री देसाई 14 नवंबर 1956 को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के रूप में केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए तथा 22 मार्च 1958 में वित्त मंत्रालय का कार्यभार संभाला। 1967 में श्री देसाई भारत के उप प्रधानमंत्री हुए।

आपातकाल के बाद 1977 में आयोजित छठवीं लोकसभा आम चुनाव में श्री देसाई गुजरात के सूरत निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए। बाद में उन्हें सर्वसम्मति से संसद में जनता पार्टी के नेता के रूप में चुना गया एवं 24 मार्च 1977 को उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली।

रविन्द्र कुमार पटेल (स. अ.)
कंपोजिट विद्यालय झौआ
वि. ख.– औराई, जनपद– भदोही

शिक्षण तकनीक

Teaching Technology

शिक्षण तकनीकी दो शब्दों को मिलाकर बना है– शिक्षण (**Teaching**) तथा तकनीकी(**Technology**)। अतः शिक्षण तकनीकी का अर्थ जानने से पहले शिक्षण और तकनीकी का व्यापक अर्थ समझना बहुत ज़रूरी है।

शिक्षण एक सामाजिक प्रक्रिया है। शिक्षण शब्द अंग्रेजी भाषा के टीचिंग (**Teaching**) शब्द से बना है जिसका अर्थ है– शिक्षा देना, पढ़ाना या सिखाना। शिक्षण एक त्रियामी प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक और छात्र, पाठ्यक्रम के माध्यम से अपने अभीष्ट लक्ष्य को प्राप्त करते हैं। संकुचित अर्थ में शिक्षण का संबंध स्कूली शिक्षा से है जिसमें अध्यापक द्वारा एक बालक को निश्चित स्थान पर एक विशिष्ट वातावरण में निश्चित अध्यापकों द्वारा उसके व्यवहार में पाठ्यक्रम के अनुसार परिवर्तन किया जाता है। इसमें शिक्षक द्वारा विद्यार्थी को कक्षा में कुछ ज्ञान या परामर्श दिया जाता है।

शिक्षण के व्यापक अर्थ में वह सब शामिल कर लिया जाता है जो व्यक्ति अपने पूरे जीवन में सीखता है। अर्थात शिक्षण का व्यापक अर्थ वह है जिसमें व्यक्ति औपचारिक, अनौपचारिक एवं निरौपचारिक साधनों के द्वारा सीखता है। इसमें शिक्षार्थी जन्म से लेकर मृत्यु तक अपनी समस्त शक्तियों का उत्तरोत्तर विकास करता रहता है।

शिक्षाशास्त्री रायवर्न के अनुसार– शिक्षण के तीन बिंदु होते हैं– शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु। इन तीनों के बीच संबंध स्थापित करना ही शिक्षण है। यह संबंध बालक की शक्तियों के विकास में सहायता प्रदान करता है। शिक्षाशास्त्री बर्टन के अनुसार– शिक्षण, सीखने के लिए दी जाने वाली प्रेरणा, निर्देशन एवं प्रोत्साहन है। अतः हम कह सकते कि किसी विषय वस्तु को माध्यम बनाकर शिक्षक एवं शिक्षार्थी के बीच विचारों के आदान–प्रदान या परस्पर अंतः प्रक्रिया को शिक्षण कहते हैं।

साधारण शब्दों में तकनीकी का अर्थ है कार्य करने की सही कला या कुशलता। तकनीकी शब्द के लिए अंग्रेजी में (**Technology**) शब्द का प्रयोग किया जाता है। जिसका अर्थ है व्यवहारिक कार्यों में वैज्ञानिक ज्ञान व आविष्कारों का प्रयोग। जब हम किसी विशिष्ट उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वैज्ञानिक ज्ञान का उपयोग करते हैं तो हम तकनीकी का ही उपयोग करते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक व्यवस्थाओं तथा प्रविधियों का प्रयोगात्मक रूप ही तकनीकी है। तकनीकी के प्रयोग से कार्यों को कुशलता एवं प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी की महत्वपूर्ण भूमिका है।

शिक्षा में तकनीकी का प्रयोग सर्वप्रथम 1926 में अमेरिका में सिडनी प्रेस्से ने शिक्षण मशीन के द्वारा किया था। शैक्षिक तकनीकी वैज्ञानिक आविष्कारों एवं वैज्ञानिक सिद्धांतों का शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में प्रयोग है, जिसके फलस्वरूप शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। इसके द्वारा शिक्षा को अधिक रोचक सरल व प्रभावशाली बनाया जा सकता है। शैक्षिक तकनीकी शिक्षा की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाने का प्रयास करती है। यह न केवल

शिक्षण–अधिगम की प्रक्रिया को प्रभावी बनाती है, अपितु यह शिक्षा के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शिक्षण तकनीकी का अर्थ– कक्षागत शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा तकनीकी का प्रयोग ही शिक्षण तकनीकी कहलाता है। जब शिक्षक अपने शिक्षण को सरल एवं प्रभावी बनाने के लिए विभिन्न तकनीकी साधनों की मदद लेता है जिससे शिक्षण एवं अधिगम दोनों प्रभावित होते हैं तो उसे शिक्षण तकनीकी कहा जाता है।

इस प्रकार शिक्षण तकनीकी का अर्थ है सीखने –सिखाने की प्रक्रिया में वैज्ञानिक ज्ञान का अनुप्रयोग। आज के वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी आविष्कारों ने मानव जीवन के हर पक्ष को प्रभावित किया है जिससे शिक्षा, शिक्षण तथा अधिगम भी बहुत प्रभावित हुए हैं। शिक्षण तकनीकी में मुख्यतः दो बिंदु निहित हैं–

(1) शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति करना।
(2)शिक्षण की क्रियाओं का यंत्रीकरण करना।

शिक्षण तकनीकी (**Teaching Technology**) की विशेषताएं–
शिक्षण एक कला है, जिसका सामान्य अर्थ कक्षागत शिक्षण से लिया जाता है जिसमें छात्रों तथा शिक्षक के मध्य अंतः क्रिया होती है। यह एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है जिसके बहुत से उद्देश्य होते हैं– जैसे बालक का सर्वांगीण विकास करना, छात्रों के कौशलों में सुधार करना, छात्रों को वर्तमान और भूत की जानकारी प्रदान करना आदि। इन सब उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षण प्रक्रिया में तकनीकी का प्रयोग किया जाता है, जिसकी मदद से धीरे–धीरे शिक्षण प्रक्रिया को सरल, रूचिकर, स्पष्ट,व्यवहारिक बनाया जाता है। यही प्रक्रिया शिक्षण तकनीकी कहलाती है। अर्थात कक्षागत शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक द्वारा तकनीकी का प्रयोग ही शिक्षण तकनीकी कहलाता है। शिक्षण तकनीकी के अंतर्गत पाठ्यवस्तु, कक्षागत अनुदेशन तथा कक्षागत व्यवहार आदि तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। यह तकनीकी शिक्षक द्वारा नियंत्रित होती है। शिक्षण तकनीकी में पाठ्यवस्तु को छात्रों के समक्ष एक शिक्षक के द्वारा ही प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षण तकनीकी, शैक्षिक तकनीकी का ही एक रूप है। इसका क्षेत्र संकुचित होता है। अर्थात इसका दायरा कक्षा–कक्ष तक ही सीमित होता है। इसको शिक्षक की आवश्यकता होती है। इसके निश्चित नियम होते हैं। इसमें ज्ञान के तीनों पक्षों ज्ञानात्मक,भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष पर बल दिया जाता है। इसके उद्देश्य पूर्व निर्धारित व निश्चित होते हैं। इसकी प्रकृति वैज्ञानिक होती है।

शिक्षण तकनीकी के सोपान / पद (**Steps**)
शिक्षण तकनीकी के मुख्यतः चार सोपान होते हैं–
(1) नियोजन (**Planning**)
(2) व्यवस्था (**Organization**)
(3) मार्गदर्शन (**Leading**)
(4) नियंत्रण (**Controlling**)

नियोजन (Planning) – यह शिक्षण प्रक्रिया का प्रथम तथा बहुत ही महत्वपूर्ण सोपान है। इस स्तर पर शिक्षक के निम्न कार्य होते हैं–पाठ्यवस्तु का विश्लेषण करना, प्रकरण का चयन करना, शिक्षण उद्देश्य चुनना तथा उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखना।

व्यवस्था (Organization)– यह शिक्षण प्रक्रिया का दूसरा सोपान है। इस स्तर पर शिक्षक के निम्न कार्य होते हैं– शिक्षण विधियों,प्रविधियां व युक्तियों को चुनना शिक्षण अधिगम सामग्रियों को चुनना तथा यह निर्धारित करना की शिक्षण अधिगम सामग्रियों को प्रयोग कब, कहां और कैसे करना है।

मार्गदर्शन (Leading)– यह शिक्षण प्रक्रिया का तीसरा सोपान है। इस स्तर पर शिक्षक छात्रों को प्रकरण को सीखने के लिए तैयार करता है। इसके लिए वह छात्रों को प्रकरण के लाभ बताता है, उन्हें प्रेरित करता है जिससे बच्चे प्रकरण में रुचि लें।

नियंत्रण (Controlling)– यह शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अंतिम सोपान है। इस सोपान में शिक्षक यह देखता है कि व्यवस्था तथा मार्गदर्शन की क्रियाओं ने सीखने को किस सीमा तक प्राप्त किया है। इसके लिए शिक्षक मापन तथा मूल्यांकन के विभिन्न प्रविधियों का सहारा लेता है। यदि शिक्षक को ऐसा अनुभव होता है कि शिक्षण के अपेक्षित उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकी है तब वह व्यवस्था तथा मार्गदर्शन की क्रियाओं में आवश्यक परिवर्तन करके सुधार करता है तथा दोबारा शिक्षण की व्यवस्था करता है।

शिक्षण तकनीकी की उपयोगिता – शिक्षण तकनीकी शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुगम तथा रोचक बनाते हुए बच्चों के ज्ञान एवं अनुभव की वृद्धि में सहायक होती है।यह शिक्षण में विविधता लाने के लिए विभिन्न विधाओं एवं साधनों का प्रयोग करती है तथा कक्षा में बच्चों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करती है। शिक्षण तकनीकी, अधिगम एवं शिक्षण हेतु उपयुक्त परिस्थितियों के निर्माण में सहायता करती है।यह विभिन्न प्रकार की शैक्षिक समस्याओं के समाधान में सहायक होती है।
शिक्षण तकनीकी द्वारा बच्चों के संज्ञानात्मक, भावनात्मक विकास के साथ–साथ कौशलों के विकास में भी सहायता मिलती है।

शिक्षण तकनीकी के उपागम (Approach)–
वे समस्त साधन जिनके प्रयोग से शिक्षण प्रक्रिया आसान हो जाती है शैक्षिक तकनीकी में उपागम कहलाते हैं ।उपागम तीन प्रकार के होते हैं–
(1) कठोर उपागम या हार्डवेयर उपागम (2) मृदुल उपागम या सॉफ्टवेयर उपागम (3) प्रणाली विश्लेषण उपागम

(1) कठोर उपागम या हार्डवेयर उपागम– शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने के लिए जब यंत्रीकरण युक्त सामग्री का प्रयोग किया जाता है, तो वह कठोर उपागम से

संबंधित होता है। किसी धातु से बने यंत्र की सहायता से शिक्षण एवं अधिगम के निकट आना अथवा शिक्षण– अधिगम से संबंधित ज्ञान, कौशल की जानकारी प्राप्त करना ही कठोर उपागम या हार्डवेयर अप्रोच कहलाता है। शिक्षक द्वारा जब अपने शिक्षण–अधिगम की प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए तथा विषयवस्तु को सरल, रोचक बनाने के लिए ट्रांजिस्टर, टेपरिकॉर्ड, टेलीविजन, शिक्षण मशीन, ओवरहेड प्रोजेक्टर एवं अन्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, तो वह कठोर उपागम से संबंधित होता है।

(2) मृदुल उपागम या सॉफ्टवेयर उपागम –

मृदुल उपागम मुख्य रूप से मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित होते हैं, इसी के द्वारा शैक्षिक स्थिति में छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है। मृदुल उपागम में यंत्रों को महत्व नहीं दिया जाता है, बल्कि यंत्रों के संचालन या कार्यक्रम के प्रेषण से संबंधित कार्यक्रमों का निर्माण साफ्टवेयर उपागम के अंतर्गत आते हैं।

मृदुल उपागम के अंतर्गत हार्डवेयर या कठोर उपागम के संचालन हेतु कार्यक्रमों का निर्माण आता है। प्रायः रेडियो, टी.वी. में शैक्षिक प्रसारण हेतु शिक्षा से संबंधित विषयवस्तु पर कार्यक्रमों का निर्माण तथा इसकी रूपरेखा मृदुल उपागम के अंतर्गत आते हैं।

(3) प्रणाली विश्लेषण उपागम– प्रणाली उपागम दो शब्दों से मिलकर बना है– प्रणाली और उपागम। प्रणाली से अभिप्राय, समग्रता से होता है, जिसके सभी तत्व, अंग या घटक परस्पर संबंधित तथा स्व– नियंत्रित होते हैं। प्रणाली उपागम समग्रता में विश्वास करती है। यह उपागम शिक्षण तथा प्रशिक्षण को सामाजिक एवं तकनीकी प्रक्रिया मानता है। यह उपागम छात्र केंद्रित होता है। संक्षेप में,यह उपागम समस्याओं के समाधान के लिए निर्णयों पर पहुंचने की विधि है और यह विधि शिक्षण एवं प्रशिक्षण व्यवस्था को नए–नए परिवर्तनों के अनुसार आगे बढ़ाने तथा विकसित होने में सहायता करती है।

प्रणाली एक दूसरे पर आधारित सहसंबंधित कारकों का एक समुच्चय है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि प्रणाली कर्मिक रूप में विशिष्ट ढंग से कार्य करने का व्यवस्थित तरीका है। अतः वह सारी व्यवस्था और उसके सब अंग जिनसे कोई निश्चित या विशिष्ट कार्य होता है, प्रणाली उपागम के अंतर्गत आते हैं।

सुनील कुमार
एआरपी (विज्ञान)
शिक्षा क्षेत्र– नवाबगंज
जनपद– बहराइच,उत्तर प्रदेश।
मोबाइल नंबर 6388172360

योग का परिचय व इस शब्द की व्युत्पत्ति

योग आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक प्रथाओं का एक समूह है जिसकी उत्पत्ति प्राचीन भारत में हुई थी। योग का शाब्दिक अर्थ है जोड़ना। योग शारीरिक व्यायाम, शारीरिक मुद्रा (आसन), ध्यान, सांस लेने की तकनीकों और व्यायाम को जोड़ता है। इस शब्द का अर्थ ही "योग" या भौतिक का स्वयं के भीतर आध्यात्मिक के साथ मिलन है।

उच्च प्राथमिक विद्यालय छतौरा, सिद्धौर बाराबंकी में नियमित योग कराया जाता है। योग से बच्चो में बहुत से लाभ देखे गए है इसलिए बच्चे नियमित योग करते भी है।मिशन शिक्षण संवाद योग ग्रुप द्वारा हर दिन का जो योग भेजा जाता है उसे बच्चे नियमित रूप से करते है।

नटराजासन

नटराजासन, डांस पोज या डांसर पोज का स्वामी व्यायाम के रूप में आधुनिक योग में एक खड़ा, संतुलन, पीठ झुकाने वाला आसन है। यह शास्त्रीय भारतीय नृत्य शैली भरतनाट्यम की एक मुद्रा से लिया गया है, जिसे नटराज मंदिर, चिदंबरम में मंदिर की मूर्तियों में दर्शाया गया है।

नटराजासन कैसे करना है।

पंजों को एक साथ रखें और आंखों की सीध में किसी बिंदु पर दृष्टि केंद्रित करें। दाएं घुटने को मोड़ें और शरीर के पीछे दाहिने हाथ से टखने को पकड़ लें। दोनों घुटनों को एक साथ रखते हुए संतुलन बनाये रखें। धीरे–धीरे दाहिने पैर को उठाते हुए पीछे की ओर तानें और जितना संभव हो ऊंचा उठायें।

नटराजासन के लाभ

नटराजासन का अभ्यास करने से कई स्वास्थ्य लाभ प्रदर्शित हो सकते हैं। यह तनाव और वजन कम करने में सहायता कर सकता है। यह एकाग्रता और मुद्रा में सुधार करने में भी सहायता करता है। चूंकि यह हिप–ओपनर है, यह नितंबों, जांघों, कमर और पेट से संबंधित बीमारियों को ठीक कर सकता है। कुल मिलाकर, यह शरीर के लचीलेपन को बढ़ा सकता है।

नटराजासन किसे नहीं करना चाहिए।

यदि आपके पैरों, कूल्हों, कंधों या कमर में चोट लगी है तो आपको यह आसन नहीं करना चाहिए। यदि आपको गठिया का पता चला है तो आपको नटराजासन करने का प्रयास नहीं करना चाहिए। यदि आप अत्यधिक पीठ दर्द से पीड़ित हैं या स्लिप्ड डिस्क से पीड़ित हैं तो आपको इस आसन से बचना चाहिए।

करे योग रहे निरोग

पूजा पाण्डेय
इंचार्ज प्रधानाध्यपक
उच्च प्राथमिक विद्यालय छतौरा सिद्धौर, बाराबंकी।

बुनियादी शिक्षा

शिक्षा बुनियादी आ गयी,
हर दिल में ज्योति जलाना है।
भाषा ही नहीं गणना में भी,
हर बच्चा निपुण बनाना है।

शिक्षक ही नहीं परिवार को भी
अब जिम्मेदारी लेनी है,
कोविड से जो नुकसान हुआ
वो कमी दूर कर लेनी है।
बुनियादी ढांचे पर कब
प्यारा सा महल बनाना है।
भाषा ही नहीं गणना में भी
हर बच्चा निपुण बनाना है।
शिक्षा बुनियादी आ गई..

मौखिक भाषा, पढ़ना, लिखना
अंकों का जहां दिखलाएंगे।
दिन हफ्ते और महीनों में,
यह परिवर्तन हम लाएंगे।
जीवन कौशल भी निखरेगा,
हम सबने अब यह ठाना है..
भाषा ही नहीं गणना में भी,
हर बच्चा निपुण बनाना है।
शिक्षा बुनियादी आ गई...

नन्हे मुन्ने बच्चे प्यारे,
अब पीछे कभी न छूटेंगे।
इन लम पद्धति गतिविधियों से,
अपनी खुशियां वे लूटेंगे।
यूँ तीन साल जब बीतेगा,
बस निपुण–निपुण कहलाना हैं।
भाषा ही नहीं गणना में भी,
हर बच्चा निपुण बनाना है।

सरिता जायसवाल (प्र0 अ0)
प्राथमिक विद्यालय खड्डा खुर्द
खड्डा कुशीनगर

बेसिक के बच्चे

(तर्ज – सावन का महीना)

हम बेसिक के बच्चे, हम नहीं किसी से कम।
गलत के आगे नहीं झुकेंगे, हम में बहुत है दम।।

डाक्टर बन देश की सेवा करेंगे, किसी महामारी से हम न डरेंगे,
कितना बङा हो संकट, पर नहीं रुकेंगे हम ।
गलत के आगे नहीं झुकेंगे, हम में बहुत है दम।।

सेना में भर्ती हो सैनिक बनेंगे, देश की खातिर हम जान भी दे देंगे,
सीमा पर हो दुश्मन, बढ़ायेंगे कदम।।
गलत के आगे नहीं झुकेंगे, हम में बहुत है दम ।।
वैज्ञानिक बनकर देश चमकायेंगे,
नये आविष्कारों से मान बढ़ायेंगे, नित नई खोजों में ,
नाम करेंगे हम।।
गलत के आगे नहीं झुकेंगे, हम में बहुत है दम।।

पढ़ लिख कर हम शिक्षक बनेंगे, माता पिता का नाम रोशन करेंगे,
कांटे हो राहों में, पर फूल बनेंगे हम ।।
गलत के आगे नहीं झुकेंगे, हम में बहुत है दम ।।
हम बेसिक के बच्चे, हम नहीं किसी से कम।।

हेमलता गुप्ता
स .अ .
प्रा .वि. मुकन्दपुर ,लोधा,
अलीगढ़

मेमोरी गेम्स

बच्चों को कुछ मनोरंजक और नया करना था। बच्चे विद्यालय में लंच के बाद थोड़ा पढ़ाई में कम मन लगाना चाहते हैं तो फिर मैंने सोचा कि कुछ अलग और मनोरंजक पढ़ाया जाए।

विधि एवम क्रियान्वयन:

1. अल्फाबेट ब्लॉक से शब्द बनाना...

कुछ बच्चों का समूह बना दिया गया और बच्चों को ब्लॉक्स दे दिए गए जिसकी मदद से बच्चों ने शब्द बनाए और यह खेल के उन्हें बहुत मज़ा आया।

2. ब्लॉक की मदद से अलग–अलग प्रकार के आकार बनाना...

कुछ बच्चों का एक अलग समूह बनाकर उनको कुछ ब्लॉक्स दे दिए गए, जिससे उन्होंने अलग–अलग प्रकार के आकार बनाए और यह आकार बनाकर बच्चों ने अलग ही खुशी महसूस की।

3. ओड मैन आउट मतलब इनमें से अलग करना...

बच्चों को कुछ फ्लैश कार्ड दे दिए गए और हर एक फ्लैश कार्ड पर कुछ चित्र बने हुए थे उन चित्रों में से बच्चों को पहचान के जो सबसे भिन्न था उसे अलग करके बताना था।

लाभः मेमोरी गेम्स बच्चों को मनोरंजक तरीके से जानकारी को याद रखना पहचानना व सीखने में मदद करते हैं। इससे बच्चों में संज्ञानात्मक विकास को बढ़ावा मिलता है, एकाग्रता रचनात्मकता और समस्या समाधान कौशल को बेहतर बनाने में भी मदद मिलती है। जो तीन गेम मैंने बच्चों को करवाए उससे उनका मानसिक विकास तो हुआ ही, लेकिन उनका जो एक पर्सनालिटी डेवलपमेंट है वह भी देखने को मिला तो इस तरीके की मेमोरी गेम्स हमें बीच–बीच में बच्चों को करवाने चाहिए, जिससे कि उनका बौद्धिक मानसिक एवं संज्ञानात्मक विकास हो सके।

पूजा पाण्डेय
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय निंदूरा
बाराबंकी।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

विद्यार्थियों में विज्ञान विषय के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने, जनमानस को विज्ञान एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रति सजग बनाने तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रति लोगों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

विज्ञान के क्षेत्र में भारत का एक समृद्ध इतिहास रहा है जहां कई भारतीय वैज्ञानिकों ने अपने वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण भारत को गौरान्वित करने का कार्य किया है। इन्हीं भारतीय वैज्ञानिकों में से एक सुप्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक सर चंद्रशेखर वेंकटरमन थे, जो एक बार लंदन से भारत आ रहे थे, समुद्र के जल को नीला देखकर उनके मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि इस समुद्र का जल नीला क्यों है? इस विषय पर उन्होंने शोध करना प्रारंभ किया और बताया कि अगर कोई प्रकाश किसी पारदर्शी वस्तु (कांच, जल) के बीच से गुजरता है तो प्रकाश का कुछ हिस्सा विक्षेपित हो जाता है जिससे वेवलेंग्थ में बदलाव होता है। इस खोज को ही रमन प्रभाव नाम दिया गया।

28 फरवरी 1928 को की गई रमन प्रभाव की इस खोज के कारण 1986 में नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन(NCSTC) ने 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में घोषित किया। तत्पश्चात भारत सरकार की अनुमति मिलने के बाद 1987 से प्रतिवर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया जाने लगा। सर सी. वी. रमन को उनकी इस खोज के कारण 1930 में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सर सी. वी. रमन भौतिकी में नोबेल पुरस्कार जीतने वाले प्रथम एशियाई नागरिक थे, जिन्हें बाद में 1954 में भारत रत्न से भी नवाज़ा गया। वर्ष 2024 के लिए "विकसित भारत के लिए स्वदेशी प्रौद्योगिकी" राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम है। इस दिवस पर विभिन्न संस्थान द्वारा यथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद द्वारा देशभर के स्कूलों, कॉलेजों विश्वविद्यालयों एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों में नए–नए वैज्ञानिक आविष्कारों को प्रोत्साहित करने तथा उन आविष्कारों के महत्व को जनमानस तक पहुंचाने के लिए विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं और सर सी.वी. रमन के साथ देश के अन्य वैज्ञानिकों को विज्ञान के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किया जाता है। इस अवसर पर भारत सरकार विभिन्न वैज्ञानिक एवं छात्रों को सम्मानित एवं पुरुस्कृत करती है।

प्रिय सम्मानित शिक्षकों एवं छात्र–छात्राओं! इस दिन हम सभी को विज्ञान के प्रति अपनी सोच को प्रोत्साहित करने का संकल्प लेना चाहिए।

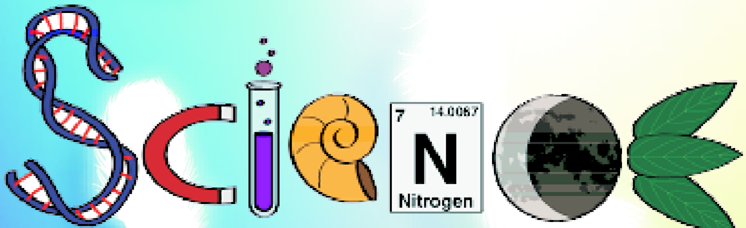

साकेत बिहारी शुक्ल
सहायक अध्यापक
उच्च प्राथमिक विद्यालय कटैया खादर
विकासखंड– रामनगर जनपद– चित्रकूट

यातायात के नियम

मोहन अभी पन्द्रह साल का था। उसे गाड़ी चलाने का बड़ा शौक था। वह अपने पिता जी की गाड़ी अक्सर चलाता था। मोहन के पिता काम के सिलसिले मे दो दिनों के लिये शहर गये थे। मोहन गाड़ी लेकर तेज़ गति से चलाते हुए अपने दोस्तों के साथ घूमने निकल गया। आज पिता जी का डर भी नहीं था कि जल्दी घर पहुँचना है। मोहन गाड़ी चलाने में इतना खुश था कि यातायात के नियमों के पालन का कोई ख्याल नहीं रहा। लापरवाही में मोहन गाड़ी की गति तेज़ कर रहा था कि अचानक सामने आ रही बस से टकरा गया।

मोहन और उसके दोस्तों को गम्भीर चोटें आयीं। सभी के अभिभावक परेशान हुए। कई महीने अस्पताल में पड़े रहने पर मोहन को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने पिताजी से माफी माँगते हुए कहा कि–''पिता जी! मुझे माफ कर दीजिये। मेरी वजह से आप को लोगों की बातें सुननी पड़ीं।'' पिता जी माफ़ करते हुए बोले– ''बेटा! ग़लती मेरी भी है। मैंने तेरे शौक को बढ़ावा दिया। तू मेरा बेटा है। तेरी ज़िद को मैं हाँ करता रहा, जबकि मुझे पहले ही तुझे समझा देना चाहिए था। अगर पहले ही तुझे समझा देता तो शायद तू आज ठीक होता। तुझे ईश्वर जल्द से जल्द ठीक करे। पर अब तू गाड़ी बड़ा होकर ही चलाना, जब यातायात के नियमों का पालन करना सीख जाये।''

''ठीक है पिताजी! अब मैं सिर्फ़ पढ़ाई करुँगा। गाड़ी जब बड़ा हो जाऊँगा, तब ही चलाऊँगा, वो भी यातायात के नियमों का पालन करते हुये।'' आज मोहन के पिता बहुत खुश थे, क्योंकि उसके बेटे में समझ आ चुकी थी।

शिक्षा–

हम सब का कर्तव्य है कि यातायात के नियमों का पालन हम स्वयं भी करें और दूसरों को भी यातायात के नियमों का पालन करने को कहें।

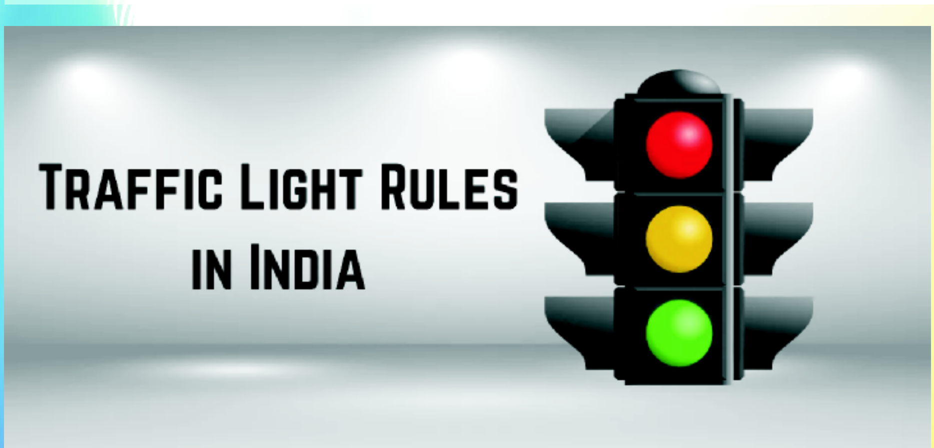

शमा परवीन
अनुदेशक
Ups टिकोरा मोड़
तजवापुर– बहराइच

पुस्तक का नामः रानू मै क्या जानू

शिक्षण संवाद

लेखकः असगर वजाहत **चित्रकारः अतनु राय** **प्रकाशकः जुगनू प्रकाशन**

जुगनू प्रकाशन का यह साहित्य जिसके अंदर बेहतरीन लेखन और जबरदस्त कार्टून के माध्यम से लेखक ने एक बच्चे की मनोदशा को दर्शाया है। रानू नाम का एक बच्चा अपने पिता से उन प्रश्नों के उत्तर जानने की कोशिश करता है जिनके उत्तर शायद उसके पिता के पास है ही नहीं। जैसे एक प्रश्न वह अपने पिताजी जी से पूछता है कि,"पापा जब आप घर पर आतें है तो मम्मी आपके लिए खाना बनाती हैं, लेकिन जब मम्मी नौकरी से आती हैं तो आप उनके लिए खाना क्यों नहीं लगाते?" रानू के चुभते हुऐ प्रश्न उसके पिता को कभी कभी गुस्सा भी दिला देते हैं।

पुस्तक में कार्टून के द्वारा जो बच्चे के मनोभाव दर्शाए गये हैं, वो अपने आप में मज़ेदार और चित्रकार की बेहतरीन कार्यकुशलता को दर्शाता है। यह बाल साहित्य जरूर है परन्तु वयस्कों के लिए भी उतना ही मज़ेदार और सोचने पर मजबूर करने वाला है। पराग ऑनर लिस्ट 2020 में शामिल इस पुस्तक को एक बार जरूर पढ़ें।

समीक्षक
विनीत शर्मा (इं. प्र.अ.)
प्रा0 वि0 नगला केशोराय
विकास खण्ड—टूंडला
जनपद—फिरोजाबाद

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल **shikshansamvad@gmail.com** या व्हाट्सएप्प नम्बर—**9458278429** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. Twitter@shikshansamvad): https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : **9458278429**
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

पूर्व माध्यमिक विद्यालय अमराहट,
राजपुर, कानपुर देहात